Bulletin : ISSUE : October to December 2022

E-NEWSLETTER

GRIZZLY COLLEGE OF EDUCATION

NAAC Accredited with 'B'Grade

Recognised by ERC, NCTE, Bhubaneswar, Affiliated to Vinoba Bhave University, Hazaribag & JAC, Ranchi

JHUMRI TELAIYA, DISTT. KODERMA, (JHARKHAND) - 825409

From The Chairman & Secretary's Desk

मनीष कपिसिमें
अध्यक्ष

अविनाश सेठ
सचिव

महाविद्यालय प्राचार्य के कुशल निर्देशन और सार्थक प्रयास से उत्तरोत्तर सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर है। दिन प्रति दिन नयी नयी उपलब्धिओं को प्राप्त कर रहा है । जो शिक्षक प्रशिक्षिण संस्थान में उत्कृष्ट को परिलक्षित है, महाविद्यालय के विकास के लिए अहम् निर्णय यही आपकी श्रेष्ठता है। महाविद्यालय विकास के पथ पर सतत् अग्रसर रहे इन्हीं शब्दों के साथ हम महाविद्यालय के सभी शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर तथा प्रशिक्षुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करते हैं।

FROM THE DEPUTY DIRECTOR'S DESK

डॉ संजीता कुमारी
उपनिदेशिका

एक शिक्षक देश का भावी निर्माता होता है ज्ञान व्यक्ति को संयम, नम्र, धैर्यवान और सफल बनाता है। हमारे महाविद्यालय में औपचारिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ के प्रशिक्षु उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक के रूप में स्वयं को स्थापित किये हैं।

प्राचार्य डा. बी. सी. स्वाइन के नेतृत्व में महाविद्यालय दिन प्रति-दिन उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर है । इन्हीं शब्दों के साथ हम महाविद्यालय के सभी सदस्यों और प्रशिक्षुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करती हूँ।

From the Principal's Desk

डॉ (प्रो0) बी0सी0 स्वैन
प्राचार्य

प्रस्तुत पत्रिका महाविद्यालय में वर्षान्त के तीन महीनों में किए गए विभिन्न ज्ञानवर्धन और रचनात्मक कार्यक्रमों का दर्पण है। शैक्षणिक और गुणवत्ता की दृष्टि से यह पाठकों के लिए संजीवनी है। निष्पक्षता और पारदर्शिता इस पत्रिका की मुख्य विशेषताएँ है। इसी परिप्रेक्ष्य में स्वच्छता अभियान, फ्रेंडली क्रिकेट लीग, तीन दिवसीय कार्यशाला स्वयं को पहचानो, बी.एड. फेयरवेल-2022, सात दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम, दिवाली सेलिब्रेशन, क्रिसमस सेलिब्रेशन, चैरिटी फन फेस्ट, झूमर युवा महोत्सव 2022 आउटरीच कार्यक्रम,महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम,उपर्युक्त सभी कार्यक्रम महाविद्यालय के निष्ठावान अध्यापकों और प्रशिक्षुओं के प्रयास और सहयोग से ही संभव हो पाया है, इसके लिए मैं सभी को हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं साथ ही निदेशक एवं उपनिदेशिका को विशेष आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपना महत्वपूर्ण सहयोग से अनुग्रहित कियें। इन्हीं शब्दों के साथ महाविद्यालय के निदेशक गण एवं सभी सदस्यों और प्रशिक्षुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

Cleaning Programme

Grizzly Cricket League

Understanding the self

Farewell B.Ed. (2020-22)

International Faculty Development Programme

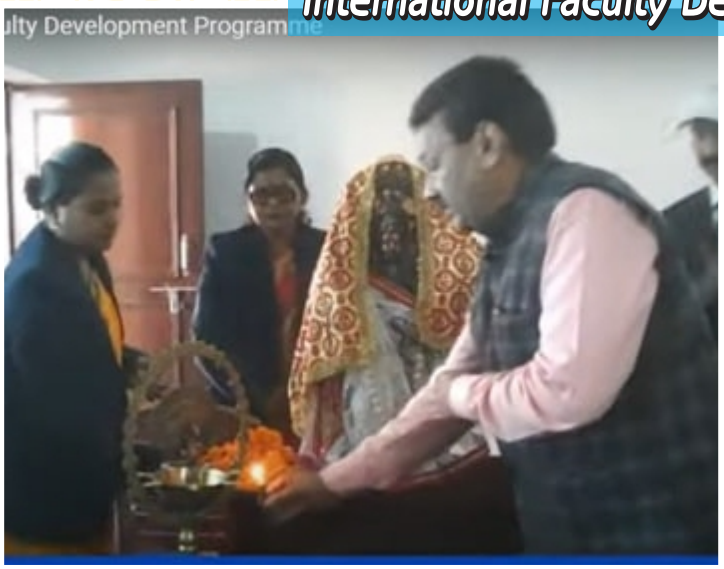

Christmas Celebration

Fun Fest, 2022

Jhoomar 2022

Outreach

Women Empowerment

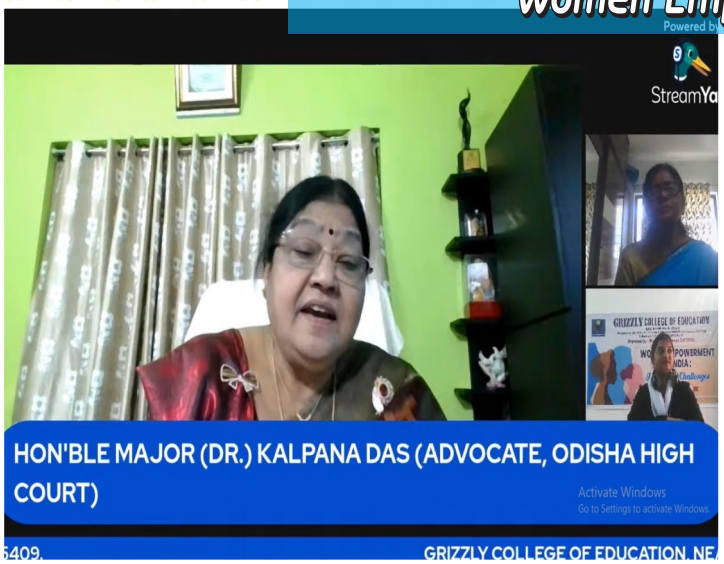

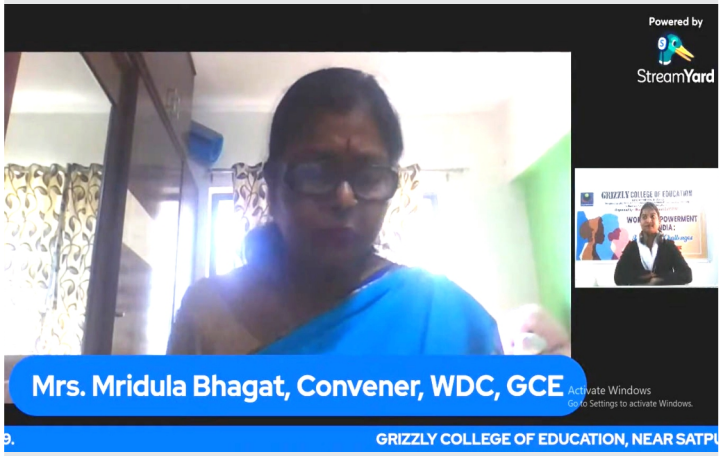

WAKIL KUMAR SINGH
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 1223

दीप जले दीवाली आई
तारे नजर से दीप सिले हैं
आशाओं के फूल खिले हैं
बिछड़े साथी आज मिले हैं
दीवाली है सब को भाई
दीप जले.....

जगमग-जगमग करती आई
धन धरती पर धरती आई
हर इक का मन हरती आई
अंधियारे में जब मुसकाई
दीप जले.....

सुंदरता का जाल बिछाया
कली-कली में रंग समाया
देख गुलों पर जोबन आया
गुन-गुन भंवरे आन लगाई
दीप जले.....

खुल गए सुंदरता के द्वारे
नूर के बरसे हर सू धारे
फूल हैं या शोले अंगारे
भांत-भांत की जोत जलाई
दीप जले...

देख जवानी शब पर आई
अंधियारे पर मस्ती छाई
रात की जब देखी रननाई
दिन की देवी भी शरमाई
दीप जले दीवाली आई...

कागज के रावण मत फूँको

MANOJ KUMAR RANA
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 1273

अर्थ हमारे व्यर्थ हो रहे, पापी पुतले अकड़ खड़े हैं
कागज के रावण मत फूँकों, जिंदा रावण बहुत पड़े हैं !!

कुंभ-कर्ण तो मदहोशी हैं, मेघनाथ भी निर्दोषी है
अरे तमाशा देखने वालों, इनसे बढ़कर हम दोषी हैं
अनाचार में घिरती नारी, हाँ दहेज की भी लाचारी-
बदलो सभी रिवाज पुराने, जो घर-घर में आज अड़े हैं
कागज के रावण मत फूँकों, जिंदा रावण बहुत पड़े हैं !!

सड़कों पर कितने खर-दूषण, झपट ले रहे औरों का धन
मायावी मारीच दौड़ते, और दुखाते हैं सब का मन
सोने के मृग-सी है छलना, दूभर हो गया पेट का पलना
गोदामों के बाहर कितने, मकरध्वजों के जाल कड़े हैं
कागज के रावण मत फूँकों, जिंदा रावण बहुत पड़े हैं !!

लखनलाल ने सुनो ताड़का, आसमान पर स्वयं चढ़ा दी
भाई के हाथों भाई के, राम राज्य की अब बरबादी।
हत्या, चोरी, राहजनी है, यह युग की तस्वीर बनी है-
न्याय, व्यवस्था में कमजोरी, आतंकों के स्वर तगड़े हैं
कागज के रावण मत फूँकों, जिंदा रावण बहुत पड़े हैं !!

बाली जैसे कई छलावे, आज हिलाते सिंहासन को
अहिरावण आतंक मचाता, भय लगता है अनुशासन को
खड़ा विभीषण सोच रहा है, अपना ही सर नोच रहा है-
नेताओं के महाकुंभ में, सेवा नहीं प्रपंच बड़े हैं
कागज के रावण मत फूँकों, जिंदा रावण बहुत पड़े हैं !!

MAHIMA KUMARI
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 1233

2 अक्टूबर खास बहुत है इसमें है इतिहास छिपा,
इस दिन गाँधी जी जन्मे थे दिया उन्होंने ज्ञान नया,
सत्य अहिंसा को अपनाओ इनसे होती सदा भलाई,
इनके दम पर गाँधी जी ने अंग्रेजों की फौज भगाई,
इस दिन लाल बहादुर जी भी इस दुनिया में आये थे,
ईमानदार और सबके प्यारे कहलाये थे,
नहीं भुला सकते इस दिन को ये दिन तो है बहुत महान,
इसमें भारत का गौरव है इसमें तिरंगे की शान हैं।

गोरों की ताकत बाँधी थी गांधी के रूप में आंधी थी,
बड़े दिलवाले फकीर थे वो पत्थर के अमिट लकीर थे वो,
पहनते थे वो धोती खादी रखते थे इरादें फौलादी,
उच्च विचार और जीवन सादा उनको प्रिय थे सबसे ज्यादा,
संघर्ष अगर तो हिंसा क्यों खून का प्यासा इंसा क्यों,
हर चीज का सही तरीका है जो बापू से हमने सिखा है,
क्रांति जिसने लादी थी सोच वो गाँधीवादी थी,
उन्होंने कहा करो अत्याचार थक जाओगे आखिरकार,
जुल्मों को सहते जाएंगे पर हम ना हाथ उठाएंगे,

एक दिन आएगा वो अवसर जब बाँधोगे अपने बिस्तर,
आगे चलके ऐसा ही हुआ गाँधी नारों ने उनको छुआ,
आगे फिरंग की बर्बाद थी और पीछे उनकी समाधि थी,
गौरों की ताकत बाँधी थी गाँधी के रूप में आंधी थी।

राष्ट्रपिता तुम कहलाते हो सभी प्यार से कहते बापू,
तुमने हमको सही मार्ग दिखाया सत्य और अहिंसा का पाठ
पढ़ाया, हम सब तेरी संतान है तुम हो हमारे प्यारे बापू।
सीधा सादा वेश तुम्हारा नहीं कोई अभिमान,
खादी की एक धोती पहने वाह रे बापू तेरी शान।
एक लाठी के दम पर तुमने अंग्रेजों की जड़ें हिलायी,
भारत माँ को आजाद कराया रखी देश की शान।

VIKRAM DANGI
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 1214

ठंठी -ठंडी हवाओं में कोई मेरी क्रिसमस गाता है,
हर बार एक थैला भरकर वो गिफ्ट लेकर आता है,
माँ हमसे कहती है वो बच्चों को प्यार करता है,
हरे-भरे क्रिसमस, सुंदर सजा कर देता है।

25 दिसम्बर को वो आता है सांता सांता कहलाता,
देखो क्रिसमस आया है ढ़ेरो खुशियाँ लाया है,
चारों तरफ सितारों की चमक है,
संग सांता क्लोज की दमक है।

चाकलेट केंडी की है छाई बहार,
खिलौनों और कपड़ों से सजे-सजें हैं बाजार,
चर्च में कैरल सब गा रहे है,
जीसस का सब जन्मदिन मना रहे है।

इस बार मुझे भी कुछ कहना है,
तुम्हारे संग प्यार को निभाना है,
खुश रहो तूम यूँ..... (2)

क्रिसमस आया पास में, बच्चे करे पुकार
सान्ता लेकर आएंगे, झोला भर उपहार ।
झोले में उपहार है, और सर पे टोपी लाल
गोलू-मोलू गुड्डे जैसा, सान्ता लगे कमाल ।

टन-टन-टन टन-टन-टन घंटी वाला सान्ता आता
हो-हो-हो हो-हो-हो, हो-हो करके खूब हंसाता ।
देखो दोस्तों आ गया यीशु का जन्मदिन,
जब लोग खुशियों के गीत गाते पूरे दिन।

इसी को कहते हैं क्रिसमस का त्योहार,
जिसपर सभी को मिलता प्यार।

दीपावली का त्योहार

SONU PANDIT
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 94

छोड़-छाड़ कर द्वेष-भाव को, मीत प्रीत की रीत निभाओ,
दिवाली के शुभ अवसर पर, मन से मन का दीप जलाओ.....

क्या है तेरा क्या है मेरा, जीवन चार दिन का फेरा,
दूर कर सको तो कर डालो, मन का गहन अँधेरा,
निंदा नफरत बुरी आदतों, से छुटकारा पाओ,
दिवाली के शुभ अवसर पर, मन से मन का दीप जलाओ.....

खूब मिठाई खाओ, लड्डू, बर्फी, चमचम, गुझिया,
पर पर्यावरण का रखना ध्यान, बम कहीं न फोड़ें कान,
वायु प्रदूषण, धुएं से बचना, रौशनी से घर द्वार को भरना,
दिवाली के शुभअवसर पर, मन से मन का दीप जलाओ.....

चंदा सूरज से दो दीपक, तन मन से उजियारा कर दें,
हर उपवन से फूल तुम्हारे जब तक जियो शान से,
हर सुख, हर खुशहाली पाओ,
दिवाली के शुभ अवसर पर, मन से मन का दीप जलाओ.....

बापू की पीड़ा

SONU PANDIT
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 94

मेरे नाम को सेकुलरिज्म का मुखौटा बना दिया है तुमने
मुझे सत्ता पाने का जरिया बना दिया है तुमने !

गाँधी–गाँधी के जाप से अपने स्वार्थो की पूर्ति की है तुमने
नोट वाले गाँधी से मोहब्बत की है तुमने !

स्वार्थ और मक्कारी की इबादत की है तुमने
हर–पल हर–दिन मेरे नाम की हत्या की है तुमने !

मेरे नाम पर वोट बैंक की राजनीति की है तुमने
गाँधीवादी पैकेट में, नकली सपने बेचे हैं तुमने !

अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए, गाँधी को भारत से बड़ा बना दिया है तुमने
गाँधी के नाम के बहाने, क्रांतिकारियों के बलिदानों को भूला दिया है तुमने !

युवा भारत को अहिंसा के नाम पर, नपुंसक बना दिया है तुमने
हे भगवान मेरे भारत को इन गांधीवादियों से बचा लो !

भारत के युवाओं को फिर राष्ट्र पूजा सिखा दो
मेरे नाम को अब और बिकने से बचा लो !!

प्रार्थना की कड़ी

ARTI KUMARI
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 37

प्रार्थना की एक अनदेखी कड़ी
बाँध देती है, तुम्हारा मन, हमारा मन,
फिर किसी अनजान आशीर्वाद में-डूबन
मिलती मुझे राहत बड़ी !

प्रात सद्यस्नात कन्धों पर बिखेरे केश
आँसुओं में ज्यों धुला वैराग्य का सन्देश
चूमती रह-रह बदन को अर्चना की धूप
यह सरल निष्काम पूजा-सा तुम्हारा रूप
जी सकूँगा सौ जनम अँधियारियों में,
यदि मुझे मिलती रहे
काले तमस की छाँह में
ज्योति की यह एक अति पावन घड़ी !
प्रार्थना की एक अनदेखी कड़ी !

चरण वे जो
लक्ष्य तक चलने नहीं पाये
वे समर्पण जो न होठों तक कभी आये
कामनाएँ वे नहीं जो हो सकीं पूरी-
घुटन, अकुलाहट, विवशता, दर्द, मजबूरी-
जन्म-जन्मों की अधूरी साधना,
पूर्ण होती है किसी मधु-देवता की बाँह में!

जिन्दगी में जो सदा झूठी पड़ी-
प्रार्थना की एक अनदेखी कड़ी!

SHABNAM PRAVEEN
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 1253

Mohandas Karam chand Gandhi, popularly known as Mahatma Gandhi, is regarded as the Father of Nation. Gandhi was a social reformist and leader of Indian Independence Movement who introduced the idea of non-violent resistance called Satyagrah. Gandhi was born in Gujarat and studied law at the Inner Temple, London. After organising a civil disobedience movement for Indians living in South Africa, he returned to India in 1915. In India, he set out on a train journey to different parts of the country trying to understand problems of farmers, peasants and urban labourers and organising protests for them. He assumed the leadership of Indian National Congress in 1921 and rose to become its most prominent leader and an iconic figure in Indian politics. He organised the Dandi Salt March in 1930 and Quit India Movement in 1942. He also worked for the upliftment of untouchables and have them a new name 'Harijan' meaning the children of God. Gandhi also wrote extensively for various newspapers and his symbol of self-reliance - the spinning wheel - became a popular symbol of Indian Independence Movement. Gandhi played a key role in pacifying people and averting the Hindu-Muslim riots as tensions rose before and during the partition of the country. He was shot dead by Nathuram Godse on January 31, 1948.

I wandered lonely as a cloud

VIKASH KUMAR
B.Ed. Session : 2021-23
Roll no. : 34

I wandered lonely as a cloud
That floats on high o'er vales and hills,
When all at once I saw a crowd,
A host, of golden daffodils;
Beside the lake, beneath the trees,
Fluttering and dancing in the breeze.

Continuous as the stars that shine
And twinkle on the milky way,
They stretched in never-ending line
Along the margin of a bay:
Ten thousand saw I at a glance,
Tossing their heads in sprightly dance.

The waves beside them danced; but they
Out-did the sparkling waves in glee:
A poet could not but be gay,
In such a jocund company:
I gazed—and gazed—but little thought
What wealth the show to me had brought:

For oft, when on my couch I lie
In vacant or in pensive mood,
They flash upon that inward eye
Which is the bliss of solitude;
And then my heart with pleasure fills,
And dances with the daffodils.

Editorial Board

Chief Editor :-

Dr. (Prof.) B.C. Swain

Editor :-

Manish Kumar Paswan

Editorial Board Students :-

Suraj Kumar Singh

Vikram Dangi

Shabnam Praveen

To